وَمَالِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٢﴾

और मुझे क्या हुवा के मैं इबादत न करूँ उस अल्लाह की जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।

ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ

क्या मैं उसे छोड़ कर दूसरे माबूद बना लूँ के अगर रहमान तआला मुझे ज़रर पहोंचाना चाहे

لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّيْٓ

तो उन की सिफ़ारिश मेरे कुछ भी काम नहीं आ सकती और न वो मुझे बचा सकते हैं। यक़ीनन तब तो मैं

اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّيْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ﴿٢٥﴾

खुली गुमराही में पड़ गया। मैं तो ईमान ले आया तुम्हारे रब पर, तो तुम मेरी बात सुनो।

قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۭ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

कहा गया के तू जन्नत में दाख़िल हो जा। उस ने कहा ऐ काश के मेरी क़ौम जान लेती।

بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا

जो मेरे रब ने मेरी मग़फिरत की है और मुझे मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों में से बना दिया। और हम ने उस की क़ौम पर

عَلٰي قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَمَا كُنَّا

उस के बाद आसमान से लशकर नहीं उतारे और न हम उतारने

مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ

वाले हैं। वो तो सिर्फ एक ही चिंघाड़ थी, तब ही वो बुझ कर

خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾ يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ

रेह गए। हाए अफ़सोस बन्दों पर! उन के पास कोई रसूल नहीं आता

اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا

मगर वो उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं। क्या उन्हों ने देखा नहीं के उन से पेहले कितनी

قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٣١﴾

क़ौमों को हम ने हलाक किया जो उन की तरफ वापस नहीं आते?

وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ

और वो सब के सब इकट्ठे हमारे सामने ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे। और उन के लिए बन्जर ज़मीन एक

الْمَيْتَةُ ۚ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ

निशानी है। जिस को हम ने ज़िन्दा किया और उस से हम ने अनाज निकाला, फिर उस में से

يَاْكُلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ

वो खाते भी हैं। और हम ने उस में खजूर और अंगूर के बाग़ात बनाए

وَّ فَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ

और हम ने उस में चशमे जारी कर दिए। ताके वो उस के फल में से खाएं

وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ سُبْحٰنَ الَّذِيْ

और उन के हाथों ने ये फल नहीं बनाए। क्या फिर वो शुक्र अदा नहीं करते? पाक है वो अल्लाह जिस ने

خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ

तमाम जोड़े पैदा किए उस में से जिस को ज़मीन उगाती है और खुद उन की जानों से भी और उन चीज़ों से

وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ

भी जिन का उन्हें इल्म नहीं। और उन के लिए एक निशानी रात है। के हम उस से दिन को खींच लेते हैं,

فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ

तो अचानक वो तारीकी में रेह जाते हैं। और सूरज चलता रेहता हैं अपने मुस्तक़र तक के लिए।

ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ؕ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ

ये ज़बर्दस्त इल्म वाले अल्लाह की मुतअय्यन की हुई मिक़दार है। और चाँद की हम ने मन्ज़िलें मुतअय्यन की हैं,

حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ

यहाँ तक के वो पुरानी शाख की तरह हो जाता है। न सूरज के लिए मुनासिब है

اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ

के वो चाँद को पकड़ ले और न रात दिन से आगे जा सकती है। और

فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ

सब के सब फ़लक में तैर रहे हैं। और उन के लिए एक निशानी ये है के हम ने उन की ज़ुर्रीयत को भरी हुई

فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ

कशती में सवार कराया। और हम ने उन के लिए कशती के मानिन्द चीज़ें पैदा कीं जिन पर वो सवारी

مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ

करते हैं। और अगर हम चाहें तो उन्हें ग़र्क़ कर दें, फिर न उन का कोई फरयादरस हो

وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾

और न उन्हें बचाया जा सके। मगर हमारी रहमत से और एक वक़्त तक फ़ाइदा देने के लिए (हम ने ग़र्क़ नहीं किया)।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ और जब उन से कहा जाता है के डरो उस से जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ ताके तुम पर रहम किया जाए। और उन के पास कोई निशानी नहीं आती उन के रब की निशानियों
رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ में से मगर वो उस से ऐराज़ करते हैं। और जब उन से कहा जाता है के
اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ ख़र्च करो उस में से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दिया है, तो काफ़िर ईमान वालों से
اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ केहते हैं के क्या हम उन को खिलाएं जिन को अगर अल्लाह चाहता तो खिला देता? तुम तो
اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ सिर्फ़ खुली गुमराही में हो। और वो केहते हैं के ये वादा कब है अगर
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً तुम सच्चे हो? वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर एक चिंघाड़ के,
تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً जो उन को पकड़ लेगी जिस वक़्त वो झगड़ रहे होंगे। फिर वो न वसीयत कर सकेंगे
رکوع ٣ وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ और न अपने घर वालों की तरफ वापस लौट सकेंगे। और सूर फूंका जाएगा
فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾ قَالُوْا तब ही वो क़ब्रों से निकल कर अपने रब की तरफ दौड़ रहे होंगे। वो कहेंगे
وقف لازم ووقف منزل وقف غفران يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ हाए अफसोस हम पर! किस ने हमें हमारी सोने की जगह से उठा दिया? ये वो है जिस का रहमान तआला ने
الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾ اِنْ كَانَتْ वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था। वो तो सिर्फ
اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٣﴾ एक ज़ोरदार आवाज़ होगी, तो फौरन ही वो इकट्ठे हमारे सामने सब हाज़िर किए जाएंगे।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ

फिर आज किसी शख़्स पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं होगा और उन्हें बदला नहीं मिलेगा

اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٤﴾ اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ

मगर उन आमाल का जो वो करते थे। यक़ीनन जन्नती आज दिल्लगी की चीज़ों

فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ

में मज़े कर रहे हैं। वो और उन की बीवियाँ सायों में तख़्तों

عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ

पर टेक लगाए हुए हैं। उन के लिए उस में मेवे हैं और वो

مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٧﴾ سَلٰمٌ ۚ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿٥٨﴾ وَامْتَازُوا

चीज़ें हैं जो वो मांगें। महरबान रब की आवाज़ में सलाम आएगा। (और कहा जाएगा के) ऐ मुजरिमो!

الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٩﴾ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ

आज तुम अलग हो जाओ। क्या मैं ने तुम्हें हुक्म नहीं दिया था ऐ आदम

اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ

की औलाद! के तुम शैतान की इबादत न करो? यक़ीनन वो तुम्हारा खुला

مُّبِيْنٌ ﴿٦٠﴾ وَّاَنِ اعْبُدُوْنِيْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾ وقف غفران ٢

दुशमन है। और ये के तुम मेरी ही इबादत करो। यही सीधा रास्ता है।

وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ؕ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا

यक़ीनन उस ने तुम में से बहोत सी मख़लूक़ को गुमराह किया है। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं

تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٦٣﴾

रखते थे? ये वो जहन्नम है जिस का तुम से वादा किया जा रहा था।

اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٦٤﴾ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ

तुम उस में आज दाख़िल हो जाओ इस वजह से के तुम कुफ़्र करते थे। आज हम मुहर लगा देंगे

عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ

उन के मुंह पर और हम से बोलेंगे उन के हाथ और गवाही देंगे उन के पैर

بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى

उन आमाल की जो वो करते थे। और अगर हम चाहें तो उन की आँखें मिटा कर

اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ۝٦٦

अन्धा कर दें, फिर वो रास्ते पर दौड़ें, फिर वो कहाँ देख पाते हैं?

وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا

और अगर हम चाहें तो उन की सूरतें मस्ख कर दें उन की जगह ही पर, फिर वो न आगे चलने की ताक़त

ركوع

مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ۝٦٧ؑ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ

रख सकें और न पीछे लौट सकें। और जिसे हम (लम्बी) उम्र देते हैं तो उसे जिस्मानी कूव्वत में औंधा

فِى الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ۝٦٨ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ

कर देते हैं। क्या ये अक़्ल नहीं रखते? और हम ने इस नबी को शेअर नहीं सिखलाया

وَمَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ۝٦٩ۙ لِّيُنْذِرَ

और न शेअर उन के लिए मुनासिब है। ये तो सिर्फ नसीहत है और साफ साफ बयान करने वाला कुरआन है। ताके

مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٧٠

वो डराए उस शख़्स को जो ज़िन्दा है और ताके काफिरों पर हुज्जत साबित हो जाए।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا

क्या उन्हों ने देखा नहीं के हम ने उन के लिए पैदा किए चौपाए अपने हाथों की बनाई हुई चीज़ों में से,

فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ۝٧١ وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ

फिर वो उन के मालिक हैं। और हम ने चौपाए उन के ताबेअ किए, फिर उन में से बाज़ उन की सवारियाँ हैं

وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ۝٧٢ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ

और उन में से बाज़ को वो खाते हैं। और उन के लिए उन चौपाओं में और भी मनाफेअ हैं और पीने की चीज़ें हैं।

اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۝٧٣ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً

क्या फिर ये शुक्र अदा नहीं करते? और उन्हों ने अल्लाह के अलावा कई माबूद बना लिए हैं

لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝٧٤ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ

के शायद उन की नुसरत की जाए। वो उन की नुसरत की ताक़त नहीं रखते, बल्के वो

وقف لازم

لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ۝٧٥ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا

उन के लिए लशकर बना कर हाज़िर किए जाएंगे। इस लिए उन का क़ौल आप को ग़मगीन न करे। यक़ीनन हम

نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝٧٦ اَوَلَمْ يَرَ

जानते हैं उसे जिसे वो छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं। क्या इन्सान ने ये देखा नहीं

الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ

के हम ने उसे एक नुत्फे से पैदा किया, तो अचानक वो खुला झगड़ालू

مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ

बन गया। और वो हमारे लिए मिसालें बयान करता है और अपनी पैदाइश को भूल जाता है। वो केहता है के कौन इन

الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ

हड्डियों को ज़िन्दा करेगा जब के वो रेज़ा रेज़ा हो चुकी होंगी? आप फरमा दीजिए के उन को ज़िन्दा करेगा वही अल्लाह

اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُ ۙ﴿٧٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ

जिस ने उन को पेहली मरतबा पैदा किया है। और वो अल्लाह हर मख़लूक़ को खूब जानने वाला है। वो अल्लाह जिस ने

مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

तुम्हारे लिए सब्ज़ दरख्त से आग को बनाया, फिर अब तुम उस से आग सुलगाते हो।

اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ

क्या वो अल्लाह जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वो इस पर क़ादिर नहीं के

عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰى ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ وقف غفران

उन के जैसों को पैदा कर दे? क्यूं नहीं? यक़ीनन वो बहोत ज़्यादा पैदा करने वाला, इल्म वला है। उस का तो हुक्म करना

اِذَآ اَرَادَ شَيْئًا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ

होता है जब वो किसी चीज़ का इरादा करता है के केहता है के हो जा, तो वो हो जाती है। फिर वो अल्लाह पाक है

الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ ع ٥

जिस के कब्ज़े में हर चीज़ की सलतनत है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।

اٰيَاتُهَا ١٨٢ (٣٧) سُوْرَةُ الصّٰفّٰتِ مَكِّيَّةٌ (٥٦) رُكُوْعَاتُهَا ٥

और ५ रूकूअ हैं सूरह साफ्फात मक्का में नाज़िल हुई उस में १८२ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ﴿١﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ﴿٢﴾ فَالتّٰلِيٰتِ

उन फरिश्तों की क़सम जो सफ बनाने वाले हैं। फिर उन फरिश्तों की क़सम जो बादलों को ज़ोर से झिड़कने वाले हैं। फिर उन

ذِكْرًا ۙ﴿٣﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۭ﴿٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

फ़रिश्तों की क़सम जो ज़िक्र की तिलावत करने वाले हैं। यक़ीनन तुम्हारा रब यकता है। वो आसमानों और ज़मीन का रब

المنزل السادس (٦)

وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝٥ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا

है और उन चीज़ों का जो उन के दरमियान में है और तमाम मशरिक़ों का रब है। यक़ीनन हम ने आसमाने दुन्या को ज़ीनत

بِزِيْنَةِ ِۨالْكَوَاكِبِ ۝٦ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝٧

के लिए सितारों से मुज़य्यन किया। और हर सरकश शैतान से हिफाज़त के लिए।

لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَ يُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ

जो मलअे आला की तरफ़ कान नहीं लगा सकते, और उन्हें हर जानिब से धुत्कार कर

جَانِبٍ ۝٨ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝٩ اِلَّا مَنْ

फेंका जाता है। और उन के लिए दाइमी अज़ाब है। मगर जो

خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠ فَاسْتَفْتِهِمْ

छुप कर कुछ उचक ले, तो उस का पीछा करता है एक चमकता अंगारा। फिर आप उन से पूछिए

اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ

के क्या उन की तख़लीक़ ज़्यादा मुशकिल है या हमारी दूसरी मख़लूक़ात की? बेशक हम ने उन्हें पैदा किया चिपकने वाली

لَّازِبٍ ۝١١ بَلْ عَجِبْتَ وَ يَسْخَرُوْنَ ۝١٢ وَاِذَا ذُكِّرُوْا

मिट्टी से। बल्के आप तअज्जुब कर रहे हैं और ये मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। और जब भी उन्हें नसीहत की जाए

لَا يَذْكُرُوْنَ ۝١٣ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۝١٤ وَقَالُوْٓا

तो नसीहत नहीं मानते। और जब कोई मोअजिज़ा देखते हैं तो मज़ाक़ उड़ाते हैं। और केहते हैं के

اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٥ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا

ये नहीं है मगर खुला जादू। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे,

ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝١٦ اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝١٧ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ

तो क्या हम ज़िन्दा किए जाएंगे? और क्या हमारे अगले बाप दादा भी?आप फ़रमा दीजिए के जी हाँ! और तुम ज़लील भी

دَاخِرُوْنَ ۝١٨ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝١٩

होगे। वो तो सिर्फ़ एक झिड़कना होगा तो अचानक वो देखने लगेंगे।

وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝٢٠ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ

और कहेंगे के हाए हमारी खराबी! ये तो हिसाब का दिन आ गया। ये फैसले का वो दिन है

الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝٢١ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ع ٥

जिस को तुम झुठलाया करते थे। तुम ज़ालिमों और उन के हममस्लकों को

وَ اَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۙ﴿٢٢﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

इकट्ठा करो और उन को जिन की ये इबादत करते थे। अल्लाह के अलावा।

فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ

फिर तुम उन को रास्ता दिखाओ आग के रास्ते की तरफ। और उन को ठेहराओ इस लिए के उन से

مَّسْـُٔوْلُوْنَ ۙ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ

सवाल किया जाएगा। तुम्हें क्या हुवा के तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते? बल्के वो आज

مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

ताबेदार बने हुए हैं। और उन में से एक दूसरे के सामने आ कर सवाल करेंगे।

قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا

वो कहेंगे के तुम थे जो हम पर बड़े ज़ोरों से चढ़ चढ़ कर आते थे। वो कहेंगे

بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۚ﴿٢٩﴾ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ

बल्के तुम ही ईमान नहीं लाए थे। और हमारा तुम पर कुछ ज़ोर

مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ

नहीं था। बल्के तुम खुद ही गुमराह थे। फिर हम पर हमारे रब का कहा साबित

رَبِّنَا ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾

हो गया के हम अज़ाब चखने वाले हैं। फिर हम ने तुम्हें गुमराह किया इस लिए के हम खुद गुमराह थे।

فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ

फिर वो सब उस दिन अज़ाब में शरीक होंगे। बेशक हम मुजरिमों के

نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ

साथ ऐसा ही करते हैं। इस लिए के जब उन्हें कहा जाता था के कोई माबूद नहीं

اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ۙ﴿٣٥﴾ وَيَقُوْلُوْنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا

सिवाए अल्लाह के, तो वो तकब्बुर करते थे। और केहते थे के क्या हम अपने माबूदों को छोड़ दें

لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ؕ﴿٣٦﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ۖ﴿٣٧﴾

एक मजनून शाइर की वजह से? बल्के वो तो हक़ ले कर आया है और उस ने तमाम पैग़म्बरों की तस्दीक़ की है।

اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ۖ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ

यक़ीनन तुम दर्दनाक अज़ाब चखने वाले हो। और तुम्हें सज़ा नहीं मिलेगी

اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾

मगर उन्ही आमाल की जो तुम करते थे। मगर अल्लाह के खालिस किए हुए बन्दे।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٤٢﴾

के ये वो हैं जिन के लिए मालूम रोज़ी है। मेवे होंगे। और उन्हें ऐज़ाज़ दिया जाएगा।

فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٤٣﴾ عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ

जन्नाते नईम में। वो तख्तों पर आमने सामने बैठे हुवे होंगे। उन को (बारी बारी)

عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾

सफेद चशमए साफ़ी से भरे जाम पेश किए जाएंगे, जो पीने वालों के लिए सरापा लज़्ज़त होंगे।

لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَعِنْدَهُمْ

जिस में न सर चकराना होगा और न उस की वजह से नशा आएगा। और उन के पास

قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾

नीची निगाहों वाली, बड़ी आँखों वाली हूरें होंगी। गोया के छुपा कर रखे हुए अन्डे हैं।

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾ قَالَ

फिर उन में से एक दूसरे से रूबरू हो कर सवाल करेंगे। उन में से

قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ﴿٥١﴾ يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ

एक केहने वाला कहेगा के मेरा एक साथी था। जो कहा करता था के क्या तू भी तस्दीक़

لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا

करने वालों में से है? के जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे

ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿٥٤﴾

क्या तब हम से हिसाब लिया जाएगा? तो वो कहेगा के क्या तुम झांक कर देखोगे?

فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَاللّٰهِ

फिर वो झांकेगा, तो उस साथी को जहन्नम के बीच में देखेगा। कहेगा के अल्लाह की क़सम!

اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٦﴾ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ

यक़ीनन तू तो क़रीब था के मुझे भी हलाक कर देता। और अगर मेरे रब की नेअमत न होती तो मैं भी

مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّا مَوْتَتَنَا

पकड़े जाने वालों में होता। क्या फिर ये सच नहीं के हम (जन्नतियों) को मरना नहीं? मगर हमारी

الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ

पेहली मौत और हमें अज़ाब नहीं होगा। यक़ीनन ये भारी

الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾ اَذٰلِكَ

कामयाबी है। उसी जैसे के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए। क्या ये

خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿٦٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً

मेहमानी के ऐतेबार से बेहतर है या ज़क़्क़ूम का दरख्त? यक़ीनन हम ने उसे ज़ालिमों के लिए

لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٣﴾ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٤﴾

आज़माइश का ज़रिया बनाया है। यक़ीनन वो एक दरख्त है, जो क़अरे जहन्नम से निकलता है।

طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٥﴾ فَاِنَّهُمْ

उस के खोशे ऐसे हैं गोया वो शयातीन के सर हैं। फिर वो

لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٦٦﴾ ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ

उस से खाएंगे, फिर उसी से पेट भरेंगे। फिर उन को

عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى

उस पर गर्म पानी से पीना होगा। फिर उन को ज़रूर दोज़ख की तरफ

الْجَحِيْمِ ﴿٦٨﴾ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ﴿٦٩﴾ فَهُمْ

लौटना होगा। उन्हों ने अपने बाप दादा को गुमराह पाया। फिर वो

عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ

उन के निशानाते क़दम पर तेज़ दौड़ रहे हैं। और यक़ीनन उन से पेहले वालों की अक्सरीयत

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٧١﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٧٢﴾

गुमराह थी। और हम ने उन में भी डराने वाले रसूल भेजे।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ

फिर आप देखिए के उन लोगों का अन्जाम कैसा हुवा जिन्हें डराया गया था? मगर अल्लाह के खालिस किए

الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾ ع ٢ ٥ ٦

हुए बन्दे। और तहक़ीक़ के हमें नूह (अलैहिस्सलाम) ने पुकारा, फिर हम कितने अच्छे दुआ कबूल करने वाले हैं।

وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَجَعَلْنَا

और हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को और उन के मानने वालों को भारी मुसीबत से नजात दी। और हम ने

ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ۝٧٧ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝٧٨ سَلٰمٌ

उन की ज़ुर्रीयत ही को बाक़ी रेहने वाला बनाया। और हम ने उन का तज़किरा पीछे आने वालों में छोड़ दिया। सलामती हो

عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ۝٧٩ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝٨٠

नूह (अलैहिस्सलाम) पर तमाम जहान वालों में। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٨١ ثُمَّ اَغْرَقْنَا

वो हमारे मोमिन बन्दों में से थे। फिर हम ने दूसरों को

الْاٰخَرِيْنَ ۝٨٢ وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ۝٨٣ اِذْ جَآءَ

ग़र्क़ किया। और उन के हममस्लकों में से अलबत्ता इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) थे। जब वो अपने रब के

رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝٨٤ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ

पास क़ल्बे सलीम ले कर आए। जब के उन्हों ने अपने बाप और अपनी क़ौम से फरमाया के

مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ۝٨٥ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ۝٨٦

किन चीज़ों की तुम इबादत करते हो? क्या अल्लाह के सिवा झूठे माबूदों को तुम चाहते हो?

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨٧ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُوْمِ ۝٨٨

फिर रब्बुल आलमीन के मुतअल्लिक़ तुम्हारा क्या गुमान है? फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने सितारों में एक निगाह की।

فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ۝٨٩ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ۝٩٠ فَرَاغَ

और फरमाया के मैं बीमार हूँ। चुनांचे वो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को छोड़ कर पुश्त फेर कर चले गए। फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۝٩١ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ۝٩٢

उन के माबूदों के पास चुपके से जा पहोंचे, और फरमाया क्या तुम खाते नहीं हो? तुम्हें क्या हुवा तुम बोलते नहीं हो?

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ۝٩٣ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ۝٩٤

फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) क़ूव्वत से उन को मारने लगे। फिर वो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सामने आए तेज़ दौड़ते हुए।

قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ۝٩٥ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने पूछा क्या तुम इबादत करते हो ऐसी चीज़ों की जिन को खुद तराशते हो? हालांके अल्लाह ने तुम्हें भी

وَمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٩٦ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ ۝٩٧

पैदा किया और उन को भी जो तुम बनाते हो। वो बोले तुम इस के लिए एक इमारत तामीर करो, फिर उस को आतिशकदे

فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ۝٩٨ وَقَالَ اِنِّيْ

में डाल दो। फिर उन्हों ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के साथ बुरे मक्र का इरादा किया, तो हम ने उन्ही को ज़लील बना दिया। और इब्राहीम(अलैहिस्सलाम)

وقف لازم

ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ

ने फ़रमाया मैं अपने रब की तरफ जा रहा हूँ, अनक़रीब वो मुझे रास्ता दिखाएगा। ऐ मेरे रब! तू मुझे

مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ

सुलहा में से औलाद अता कर। तो हम ने उन्हें बशारत दी हिल्म वाले लड़के की। फिर जब वो लड़का इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के

السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ

साथ दौड़ने की उम्र को पहोंच गया, तो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरे बेटे! मैं ख्वाब देख रहा हूँ के मैं तुझे ज़बह कर

فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ز

रहा हूँ, इस लिए तू देख ले, तेरी क्या राए है? बेटे ने कहा के ऐ मेरे अब्बा! आप कर गुज़रिए जिस का आप को हुक्म दिया

سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّآ اَسْلَمَا

जा रहा है। अगर अल्लाह ने चाहा तो अनक़रीब आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे। फिर जब दोनों ने हुक्म मान लिया और

وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٤﴾ قَدْ

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने बेटे को पेशानी के बल लिटा दिया। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को आवाज़ दी के ऐ इब्राहीम! यक़ीनन

صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾

आप ने ख्वाब सच कर दिखाया। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ

अलबत्ता ये खुला इमतिहान था। और हम ने एक अज़ीम ज़बीहा उन्हें फिदये में

عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ سَلٰمٌ

दिया। और हम ने उन का तज़किरा पीछे आने वालों में छोड़ दिया। सलामती हो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾ اِنَّهٗ

पर। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं। बेशक वो

مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا

हमारे मोमिन बन्दों में से थे। और हम ने उन्हें बशारत दी इसहाक़ (अलैहिस्सलाम) की जो नबी होंगे,

مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾ وَ بٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ

सुलहा में से होंगे। और हम ने उन पर और इसहाक़ (अलैहिस्सलाम) पर बरकतें नाज़िल फरमाईं।

وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿١١٣﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا ع ٣

और दोनों की औलाद में से कुछ नेक हैं और कुछ अपनी जान पर खुला जुल्म करने वाले हैं। और यक़ीनन हम ने

عَلٰى مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَ نَجَّيْنٰهُمَا وَ قَوْمَهُمَا

मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारून (अलैहिस्सलाम) पर एहसान किया। और हम ने उन दोनों को और उन की क़ौम को भारी

مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۱۵﴾ وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۱۱۶﴾

मुसीबत से नजात दी। और हम ने उन की नुसरत की, फिर वही ग़ालिब रहे।

وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ

और हम ने उन दोनों को साफ साफ बयान करने वाली किताब दी। और हम ने उन दोनों को सीधे रास्ते की

الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۱۱۸﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ سَلٰمٌ

रहनुमाई की। और हम ने उन का तज़किरा पीछे आने वालों में छोड़ दिया। सलामती हो

عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۱۲۰﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۲۱﴾

मूसा और हारून (अलैहिमस्सलाम) पर। यक़ीनन हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَاِنَّ اِلْيَاسَ

वो हमारे मोमिन बन्दों में से थे। और यक़ीनन इल्यास (अलैहिस्सलाम)

لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اَتَدْعُوْنَ

पैग़म्बरों में से थे। जब उन्हों ने अपनी क़ौम से फरमाया क्या तुम डरते नहीं हो? क्या तुम पुकारते हो

بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ

बअल बुत को और तुम छोड़ देते हो बनाने वालों में सब से बेहतरीन बनाने वाले अल्लाह को, अपने रब को और अपने

اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۲۶﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾

पेहले बाप दादाओं के रब को। फिर उन्हों ने उन को झुठलाया, फिर वो ज़रूर पकड़े जाएंगे।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۲۹﴾

मगर अल्लाह के खालिस किए हुए बन्दे। और हम ने उन का तज़किरा पीछे आने वालों में छोड़ दिया।

سَلٰمٌ عَلٰۤى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿۱۳۰﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۱﴾

सलामती हो इलयासीन पर। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۲﴾ وَاِنَّ لُوْطًا

यक़ीनन वो हमारे मोमिन बन्दों में से थे। और यक़ीनन लूत (अलैहिस्सलाम) पैग़म्बरों

لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۳۴﴾ اِلَّا عَجُوْزًا

में से थे। जब के हम ने उन्हें और उन के घर वालों को, सब को नजात दी। मगर बुढ़िया

فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٣٥﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٣٦﴾ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ

जो हलाक होने वालों में हो गई। फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया। और यक़ीनन तुम उन पर सुबह

عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿١٣٧﴾ وَبِالَّيْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٣٨﴾ ع ٢٥ ٨

और रात के वक्त गुज़रते हो। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते?

وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٩﴾ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٤٠﴾

और यक़ीनन यूनुस (अलैहिस्सलाम) पैग़म्बरों में से थे। जब वो भरी हुई कशती की तरफ भागे।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ

फिर कशती वालों ने क़ुरआअन्दाज़ी की, पस वो समन्दर में डाले जाने वाले हो गए। फिर उन को मछली ने लुक़मा बना लिया

وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْلَاۤ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٣﴾ لَلَبِثَ

इस हाल में के ये अपने को मलामत कर रहे थे। फिर अगर वो तस्बीह करने वाले न होते। तो ज़रूर वो क़ब्रों

فِيْ بَطْنِهٖۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ النصف

से मुर्दे उठाए जाने के दिन तक मछली के पेट में रेहते। फिर हम ने उन्हें फैंक दिया खुले मैदान में इस हाल

سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾

में के वो बीमार थे। और हम ने उन पर एक बेलदार दरख्त उगा दिया।

وَ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰمَنُوْا

और हम ने उन को एक लाख या ज़्यादा इन्सानों की तरफ रसूल बना कर भेजा। पस वो ईमान लाए,

فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ

तो हम ने उन्हें मुतमत्तेअ किया एक वक़्त तक के लिए। फिर आप उन से पूछिए क्या आप के रब के लिए बेटियाँ और

وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ

उन के लिए बेटे? या हम ने फरिशतों को बेटियाँ बनाया इस हाल में के वो

شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ اَلَاۤ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾

देख रहे थे? सुनो! यक़ीनन वो अपने पास से घड़ा हुवा झूठ बक रहे हैं।

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ

के अल्लाह ने औलाद बनाई है। और यक़ीनन ये झूठे हैं। क्या अल्लाह ने बेटियाँ चुन कर खुद लीं

عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾

बेटों के मुक़ाबले में? तुम्हें क्या हुवा, तुम कैसे फैसले करते हो? क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते?

اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾

या तुम्हारे पास रोशन दलील है? तो अपनी किताब लाओ अगर तुम सच्चे हो।

وَ جَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَ بَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ

और ये अल्लाह और जिन्नात के दरमियान नसब बयान करते हैं। हालांके जिन्नात को पक्का यक़ीन है

اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾

के वो हाज़िर किए जाएंगे। अल्लाह पाक है उन चीज़ों से जो ये बयान करते हैं।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾ فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾ مَآ اَنْتُمْ

मगर अल्लाह के खालिस किए हुए बन्दे। फिर तुम और वो जिन की तुम इबादत करते हो, अल्लाह के खिलाफ

عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾ اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مِنَّآ

गुमराह नहीं कर सकते, मगर उसी को जो जहन्नमरसीद होने वाला है। (मुशरिकीन के बरअक्स फरिशते तो केहते हैं)

اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾ وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾

और हम में से हर एक का मक़ाम मुतअय्यन है। और हम तो सफ बनाते हैं।

وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾ لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا

और हम तो तस्बीह करने वाले हैं। हालांके ये मुशरिक केहते थे के अगर हमारे पास

ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾

पेहले लोगों की नसीहत होती, तो ज़रूर हम अल्लाह के खालिस किए हुए बन्दे हो जाते।

فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا

फिर उन्हों ने उसी के साथ कुफ्र किया, फिर जल्द ही उन्हें पता चल जाएगा। और यक़ीनन हमारे भेजे हुए

لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾

पैग़म्बरों के मुतअल्लिक़ हमारा पेहले से हुक्म हो चुका है, के उन की ज़रूर नुसरत की जाएगी।

وَ اِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾

और हमारा लशकर ही ग़ालिब रहेगा। इस लिए आप उन से एक वक्त तक मुंह फेर लीजिए।

وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾

और आप उन को देखते रहिए, फिर वो भी देख लेंगे। क्या हमारा अज़ाब ये जल्दी तलब कर रहे हैं?

فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ

फिर जब अज़ाब उन के आंगन में उतरेगा, तो उन लोगों की सुबह बुरी होगी जिन्हें डराया गया था। और आप

عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾ وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾

उन से एक वक़्त तक ऐराज़ कीजिए। और आप देखते रहिए, फिर वो भी देख लेंगे।

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلٰمٌ

आप का रब पाक है, इज़्ज़त वाला रब है, पाक है उन बातों से जो ये बयान कर रहे हैं। और सलामती हो

عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾ ع ٥

पैग़म्बरों पर। और तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं।

سُوْرَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ (٣٨)

اٰيَاتُهَا ٨٨ (٣٨) سُوْرَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ رُكُوْعَاتُهَا ٥

और ५ रूकूअ हैं सूरह सॉद मक्का में नाज़िल हुई उस में ८८ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

सॉद, नसीहत वाले कुरआन की क़सम! बल्के वो लोग जो काफिर हैं

فِىْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿٢﴾ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ

वो ज़बर्दस्ती और मुखालफत में हैं। उन से पेहले बहोत सी क़ौमों को हम ने हलाक किया,

فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾ وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ

फिर उन्हों ने पुकारा, और वो छुटकारे का वक़्त नहीं था। और उन को तअज्जुब हुवा इस बात से के उन के पास

مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ز وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٤﴾

उन्ही में से एक डराने वाला आया। और काफिरों ने कहा के ये झूठा जादूगर है।

اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عُجَابٌ ﴿٥﴾

क्या उस ने तमाम माबूदों का एक माबूद बना दिया? यक़ीनन ये बड़ी अजीब बात है।

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ

और उन के सरदार ये केहते हुए चले गए के तुम भी चलो और अपने माबूदों ही के साथ चिपके रहो।

اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ يُّرَادُ ﴿٦﴾ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِى الْمِلَّةِ

ये तो कोई गर्ज़ वाली बात है। इस को हम ने पिछले दीन में

الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ﴿٧﴾ ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ

नहीं सुना। यक़ीनन ये तो सिर्फ घड़ी हुई बात है। हमारे दरमियान में से क्या इसी पर ये कुरआन

مِنۢ بَيۡنِنَا ؕ بَلۡ هُمۡ فِىۡ شَكٍّ مِّنۡ ذِكۡرِىۡ ۚ

उतारा गया? बल्के वो मेरे ज़िक्र की तरफ से शक में हैं।

بَلۡ لَّمَّا يَذُوۡقُوۡا عَذَابِ ۖ ؕ اَمۡ عِنۡدَهُمۡ خَزَآئِنُ رَحۡمَةِ رَبِّكَ

बल्के अब तक उन्हों ने मेरा अज़ाब चखा नहीं। या उन के पास तेरे रब की रहमत के खज़ाने हैं?

الۡعَزِيۡزِ الۡوَهَّابِ ۚ ﴿۹﴾ اَمۡ لَهُمۡ مُّلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ

जो ज़बर्दस्त है, बहोत देने वाला है। या उन के लिए आसमानों और ज़मीन और उन के दरमियान की

وَمَا بَيۡنَهُمَا ۖ فَلۡيَرۡتَقُوۡا فِى الۡاَسۡبَابِ ﴿۱۰﴾ جُنۡدٌ مَّا هُنَالِكَ

सल्तनत है, तो उन्हें चाहिए के रस्सियों के ज़रिए ऊपर चढ़ जाएं। ये भी एक फौज है उन गिरोहों

مَهۡزُوۡمٌ مِّنَ الۡاَحۡزَابِ ﴿۱۱﴾ كَذَّبَتۡ قَبۡلَهُمۡ قَوۡمُ نُوۡحٍ وَّعَادٌ

में से जो यहाँ शिकस्त खा चुके हैं। उन से पेहले क़ौमे नूह और क़ौमे आद

وَّ فِرۡعَوۡنُ ذُو الۡاَوۡتَادِ ۙ ﴿۱۲﴾ وَثَمُوۡدُ وَقَوۡمُ لُوۡطٍ وَّاَصۡحٰبُ

और मेखों वाले फ़िरऔन ने और क़ौमे समूद और क़ौमे लूत और ऐका वालों

لۡئَيۡكَةِ ؕ اُولٰٓئِكَ الۡاَحۡزَابُ ﴿۱۳﴾ اِنۡ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ

ने भी तकज़ीब की। यही गिरोह हैं। उन सब ही ने रसूलों को

ع الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿۱۴﴾ وَمَا يَنۡظُرُ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا صَيۡحَةً

झुठलाया, फिर मेरा अज़ाब नाज़िल हुवा। और ये मुन्तज़िर नहीं हैं मगर एक लम्बी

وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنۡ فَوَاقٍ ﴿۱۵﴾ وَقَالُوۡا رَبَّنَا عَجِّلۡ لَّنَا

आवाज़ के, जिस के लिए दरमियानी वक़्फा नहीं है। और उन्हों ने कहा के ऐ हमारे रब! तू हमारे लिए

قِطَّنَا قَبۡلَ يَوۡمِ الۡحِسَابِ ﴿۱۶﴾ اِصۡبِرۡ عَلٰى مَا يَقُوۡلُوۡنَ

हिसाब के दिन से पेहले हमारा हिसाब जल्दी ले ले। आप सब्र कीजिए उन बातों पर जो ये केह रहें हैं और हमारे

وَاذۡكُرۡ عَبۡدَنَا دَاوٗدَ ذَا الۡاَيۡدِ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۷﴾ اِنَّا سَخَّرۡنَا

बन्दे दावूद (अलैहिस्सलाम) का तज़किरा कीजिए जो कूव्वत वाले थे। वो अल्लाह की तरफ बहोत रूजूअ होने वाले थे। हम ने उन

الۡجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحۡنَ بِالۡعَشِىِّ وَالۡاِشۡرَاقِ ﴿۱۸﴾ وَالطَّيۡرَ

के साथ पहाड़ों को मुसख्खर किया था जो तस्बीह करते थे शाम और सुबह के वक्त। और परिन्दे भी

مَحۡشُوۡرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۹﴾ وَشَدَدۡنَا مُلۡكَهٗ وَاٰتَيۡنٰهُ

इकट्ठे हो कर। सब मिल कर अल्लाह के आगे रूजूअ होते थे। और हम ने उन की सल्तनत को मज़बूत किया था और हम ने

الْحِكْمَةَ وَ فَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ وقف لازم

उन्हें हिक्मत और फ़स्ले खिताब दिया था। और क्या आप के पास मुद्दईयों की खबर पहोंची,

اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا

जब वो दीवार फलांग कर मेहराब में आए। दावूद (अलैहिस्सलाम) पर जब वो दाखिल हुए तो वो उन से घबराए, उन्हों

لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا

ने कहा के आप न डरिए। हम दो मुद्दई हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है, इस लिए आप हमारे

بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾

दरमियान हक़ के मुताबिक़ फैसला कीजिए और ज़्यादती न कीजिए और हमारी सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई कीजिए।

اِنَّ هٰذَآ اَخِيْ ۫ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۫

ये मेरा भाई है। उस की निनान्वे भेड़े थीं और मेरी एक भेड़ थी।

فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ

तो ये केहता है के वो एक भी तू मुझे दे दे और बात में मुझ पर ज़बर्दस्ती करता है। दावूद (अलैहिस्सलाम) ने

بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ

फ़रमाया उस ने तेरी भेड़ अपनी भेड़ों में मिलाने के लिए मांग कर तुझ पर जुल्म किया। और अक्सर शरीक

لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

एक दूसरे पर ज़्यादती ही करते हैं, मगर जो ईमान लाए और नेक काम

الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ؕ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ

करते रहे और ऐसे लोग थोड़े हैं। और दावूद (अलैहिस्सलाम) ने गुमान किया के हम ने उन का इमतिहान लिया

فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۩ ﴿٢٤﴾ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ السجدة ١٠

तो उन्हों ने अपने रब से इस्तिग़फार किया और सज्दे में गिर पड़े और तौबा की। तो हम ने उन की ये खता मुआफ कर दी।

وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٢٥﴾ يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ

और उन का हमारे नज़दीक बड़ा मरतबा है और अच्छा ठिकाना है। ऐ दावूद! हम ने आप को जानशीन

خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ

बनाया ज़मीन में, इस लिए आप इन्सानों के दरमियान इन्साफ के साथ फैसला कीजिए और ख्वाहिश के पीछे

الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ

न चलिए, वरना ये ख्वाहिश आप को अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर देगी। यक़ीनन जो अल्लाह के रास्ते से

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ

भटकते हैं, उन के लिए सख्त अज़ाब है इस वजह से के उन्हों ने हिसाब के दिन को

الْحِسَابِ۝٢٦ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا ع ١٢

भुला दिया। और हम ने आसमान और ज़मीन और उन के दरमियान की चीज़ें बेकार नहीं

بَاطِلًا ؕ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

बनाईं। ये तो काफिरों का गुमान है। फिर काफिरों के लिए दोज़ख से

مِنَ النَّارِ ؕ۝٢٧ اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

हलाकत है। क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۫ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ۝٢٨

ज़मीन में फसाद फैलाने वालों के मानिन्द कर देंगे? या हम मुत्तक़ियों को फाजिरों की तरह कर देंगे?

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا

ये मुबारक किताब है जो हम ने आप की तरफ उतारी है ताके ये उस की आयतों में ग़ौर करें और ताके अक़्ल वाले

الْاَلْبَابِ۝٢٩ وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ

नसीहत पकड़ें। और हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को सुलैमान (अलैहिस्सलाम) अता किए। कितने अच्छे बन्दे थे! यक़ीनन वो अल्लाह की

اَوَّابٌ ؕ۝٣٠ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۙ۝٣١

तरफ रूजूअ करने वाले थे। जब उन के सामने शाम के वक्त तीन पैरों पर खड़े रेहने वाले उम्दा घोड़े पेश किए गए।

فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ

तो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने कहा के मैं ने रब की याद छोड़ कर माल से महब्बत कर ली

حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۖ۝٣٢ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ

यहाँ तक के सूरज पर्दे में छुप गया। वो घोड़े मेरे सामने पेश करो। फिर वो उन की पिंडलियों और गर्दनों पर तलवार

وَالْاَعْنَاقِ۝٣٣ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ

चलाने लगे। तहक़ीक़ के हम ने सुलैमान (अलैहिस्सलाम) का इम्तिहान लिया और हम ने उन की कुर्सी पर एक धड़ को डाल दिया, फिर

جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ۝٣٤ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا

वो अल्लाह की तरफ मुतवज्जेह हुए। केहने लगे ऐ मेरे रब! तू मेरी मग़फिरत कर दे और मुझे ऐसी सल्तनत अता फरमा

لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ۝٣٥ فَسَخَّرْنَا

जो मेरे बाद किसी के लिए सज़ावार न हो। यक़ीनन तू बहोत ज़्यादा अता करने वाला है। फिर हम ने

لَهُ الرِّيۡحَ تَجۡرِىۡ بِاَمۡرِهٖ رُخَآءً حَيۡثُ اَصَابَ ۙ﴿۳۶﴾ وَالشَّيٰطِيۡنَ

उन के लिए हवा को ताबेअ किया जो चलती थी सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के हुक्म से नर्मी से जहाँ वो चाहते। और हर तामीर करने

كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ۙ﴿۳۷﴾ وَّاٰخَرِيۡنَ مُقَرَّنِيۡنَ فِى الۡاَصۡفَادِ ﴿۳۸﴾

वाले और ग़ोता लगाने वाले शयातीन को ताबेअ किया। और दूसरे ज़न्जीरों में जकड़े हुए होते थे।

هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامۡنُنۡ اَوۡ اَمۡسِكۡ بِغَيۡرِ حِسَابٍ ﴿۳۹﴾

ये हमारी अता है, फिर आप एहसान कीजिए या रोके रखिए, कुछ हिसाब न होगा।

وَاِنَّ لَهٗ عِنۡدَنَا لَزُلۡفٰى وَحُسۡنَ مَاٰبٍ ﴿۴۰﴾ ع وَاذۡكُرۡ عَبۡدَنَاۤ اَيُّوۡبَ ۘ وقف لازم

और उन का हमारे हाँ बड़ा मरतबा और अच्छा ठिकाना है। और याद कीजिए हमारे बन्दे अय्यूब (अलैहिस्सलाम) को।

اِذۡ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىۡ مَسَّنِىَ الشَّيۡطٰنُ بِنُصۡبٍ وَّعَذَابٍ ؕ﴿۴۱﴾

जब के उन्हों ने अपने रब को पुकारा के मुझे शैतान ने तकलीफ और अज़ीयत पहोंचाई है।

اُرۡكُضۡ بِرِجۡلِكَ ۚ هٰذَا مُغۡتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿۴۲﴾

(अल्लाह ने फरमाया) आप अपना पैर ज़मीन से रगड़िए। ये ठंडा पीने और नहाने का पानी है।

وَوَهَبۡنَا لَهٗۤ اَهۡلَهٗ وَمِثۡلَهُمۡ مَّعَهُمۡ رَحۡمَةً مِّنَّا وَذِكۡرٰى

और हम ने उन को उन के घर वाले और उन के जैसे उन के साथ और भी अता किए अपनी रहमत से और अक़्ल वालों के

لِاُولِى الۡاَلۡبَابِ ﴿۴۳﴾ وَخُذۡ بِيَدِكَ ضِغۡثًا فَاضۡرِبۡ بِّهٖ

लिए नसीहत के तौर पर। और (हम ने कहा) आप अपने हाथ में (तिन्कों का) एक गट्ठर लीजिए, फिर उसे मारिए

وَلَا تَحۡنَثۡ ؕ اِنَّا وَجَدۡنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعۡمَ الۡعَبۡدُ ؕ اِنَّهٗۤ

और क़सम न तोड़िए। हम ने उन को साबिर पाया। कितने अच्छे बन्दे थे! वो अल्लाह की तरफ

اَوَّابٌ ﴿۴۴﴾ وَاذۡكُرۡ عِبٰدَنَاۤ اِبۡرٰهِيۡمَ وَاِسۡحٰقَ وَيَعۡقُوۡبَ اُولِى

रूजूअ होने वाले थे। और आप हमारे बन्दे इब्राहीम और इस्हाक़ और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) का तज़किरा कीजिए जो

الۡاَيۡدِىۡ وَالۡاَبۡصَارِ ﴿۴۵﴾ اِنَّاۤ اَخۡلَصۡنٰهُمۡ بِخَالِصَةٍ ذِكۡرَى

हाथों और आँखों वाले थे। यकीनन हम ने उन्हें दारे आखिरत की याद के लिए खालिस

الدَّارِ ۚ﴿۴۶﴾ وَاِنَّهُمۡ عِنۡدَنَا لَمِنَ الۡمُصۡطَفَيۡنَ الۡاَخۡيَارِ ؕ﴿۴۷﴾

किया था। और वो हमारे नज़दीक अलबत्ता अच्छे मुन्तखब किए हुए बन्दों में से थे।

وَاذۡكُرۡ اِسۡمٰعِيۡلَ وَالۡيَسَعَ وَذَا الۡكِفۡلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الۡاَخۡيَارِ ؕ﴿۴۸﴾

और आप तज़किरा कीजिए इस्माईल और अलयसअ और जुलकिफ़्ल (अलैहिमुस्सलाम) का। और सब के सब अच्छे लोगों में से थे।

هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍۙ ۝۴۹ جَنّٰتِ
ये नसीहत है। और मुत्तक़ियों के लिए अच्छा अन्जाम ज़रूर है। जन्नाते अद्न

عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُۚ ۝۵۰ مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ
हैं, जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे। उन में वो टेक लगाए हुए होंगे,

فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ۝۵۱ وَ عِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ
उन में वो मांगेंगे बहोत से मेवे और शराब। और उन के पास नीची निगाहों वाली

الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ۝۵۲ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝۵۳
हमउम्र हूरें होंगी। (कहा जाएगा) ये वो नेअमतें हैं जिन का हिसाब के दिन के लिए तुम से वादा किया जाता था।

اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ۝۵۴ هٰذَا ؕ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ
ये हमारी ऐसी रोज़ी है जिस के लिए खत्म होना नहीं। ये तो होगा। और सरकशों का अलबत्ता

لَشَرَّ مَاٰبٍۙ ۝۵۵ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝۵۶ هٰذَا ۙ
बुरा ठिकाना है। जहन्नम है। जिस में वो दाखिल होंगे। फिर वो बुरी आरामगाह है। ये अज़ाब है,

فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌۙ ۝۵۷ وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ اَزْوَاجٌ ۝۵۸
फिर उन्हें चाहिए के उस को चखें गर्म पानी और पीप। और उसी शक्ल के दूसरे अज़ाब भी होंगे।

هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًاۢ بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا
(दोज़खी कहेंगे) ये एक और जमाअत तुम्हारे साथ घुस रही है। उन के लिए मरहबा न हो। वो आग में दाखिल

النَّارِ ۝۵۹ قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۟ لَا مَرْحَبًاۢ بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ
होने वाले हैं। वो बोलेंगे बल्के तुम्हारे लिए मरहबा न हो। तुम ही ने उस को हमारे लिए पेहले से तय्यार किया,

لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝۶۰ قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا
फिर ये बुरी ठेहेरने की जगह है। वो कहेंगे ऐ हमारे रब! जिस ने भी इस को हमारे लिए पेहले से तय्यार किया हो,

فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ۝۶۱ وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى
तो तू उसे दोज़ख में दुगना अज़ाब दे। और वो कहेंगे के क्या हुवा के हम नहीं

رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ۝۶۲ اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا
देखते उन मर्दों को जिन को हम बुरा समझते थे? क्या उन को हम ने मज़ाक़ बनाया था

اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ۝۶۳ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ
या उन से हमारी निगाहें चूक गई हैं? बेशक ये हक़ है, दोज़खियों का

الثلثة

اَهۡلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلۡ اِنَّمَاۤ اَنَا مُنۡذِرٌ ۖ وَّمَا مِنۡ اِلٰهٍ ع ٤

आपस में झगड़ना। आप फ़रमा दीजिए के मैं तो सिर्फ डराने वाला हूँ। और कोई माबूद नहीं

اِلَّا اللّٰهُ الۡوَاحِدُ الۡقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ

मगर अल्लाह जो यकता है, ग़ालिब है। आसमानों और ज़मीन और उन के दरमियान की चीज़ों का रब है,

وَمَا بَيۡنَهُمَا الۡعَزِيۡزُ الۡغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلۡ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيۡمٌ ﴿٦٧﴾ اَنۡتُمۡ عَنۡهُ

ज़बर्दस्त है, बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला है। आप फरमा दीजिए के ये अज़ीम खबर है। जिस से तुम

مُعۡرِضُوۡنَ ﴿٦٨﴾ مَا كَانَ لِىَ مِنۡ عِلۡمٍ بِالۡمَلَاِ الۡاَعۡلٰۤى

ऐराज़ कर रहे हो। मुझे मलअे आला का इल्म नहीं था

اِذۡ يَخۡتَصِمُوۡنَ ﴿٦٩﴾ اِنۡ يُّوۡحٰۤى اِلَىَّ اِلَّاۤ اَنَّمَاۤ اَنَا نَذِيۡرٌ

जब वो झगड़ रहे थे। मेरी तरफ तो सिर्फ वही किया जा रहा है के मैं साफ साफ डराने

مُّبِيۡنٌ ﴿٧٠﴾ اِذۡ قَالَ رَبُّكَ لِلۡمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىۡ خَالِقٌۢ بَشَرًا

वाला हूँ। जब आप के रब ने फरिशतों से फरमाया के यक़ीनन मैं मिट्टी से इन्सान को पैदा करने

مِّنۡ طِيۡنٍ ﴿٧١﴾ فَاِذَا سَوَّيۡتُهٗ وَنَفَخۡتُ فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِىۡ فَقَعُوۡا

वाला हूँ। फिर जब मैं उस को पूरा बना लूँ और मैं उस मे अपनी रूह फूंक दूँ

لَهٗ سٰجِدِيۡنَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ الۡمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمۡ اَجۡمَعُوۡنَ ﴿٧٣﴾

तो तुम उस के सामने सज्दे में गिर जाना। फिर सब ही फरिशतों ने इकट्ठे सज्दा किया।

اِلَّاۤ اِبۡلِيۡسَ ؕ اِسۡتَكۡبَرَ وَكَانَ مِنَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يٰۤاِبۡلِيۡسُ

मगर इबलीस ने। जिस ने तकब्बुर किया और वो काफिरों में से हो गया। अल्लाह ने फरमाया के ऐ इबलीस!

مَا مَنَعَكَ اَنۡ تَسۡجُدَ لِمَا خَلَقۡتُ بِيَدَىَّ ؕ اَسۡتَكۡبَرۡتَ

तुझे किस चीज़ ने रोका इस से के तू सज्दा करे उस को जिस को मैं ने अपने हाथों से बनाया? क्या तू ने बड़ा बनना चाहा

اَمۡ كُنۡتَ مِنَ الۡعَالِيۡنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَا خَيۡرٌ مِّنۡهُ ؕ خَلَقۡتَنِىۡ

या तू बुलन्द मर्तबा वालों में से है? इबलीस ने कहा के मैं इस से बेहतर हूँ। तू ने मुझे पैदा किया है

مِنۡ نَّارٍ وَّخَلَقۡتَهٗ مِنۡ طِيۡنٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَاخۡرُجۡ مِنۡهَا فَاِنَّكَ

आग से और तू ने इस को मिट्टी से पैदा किया है। अल्लाह ने फरमाया के तू जन्नत से निकल, यक़ीनन तू

رَجِيۡمٌ ۖ ﴿٧٧﴾ وَّاِنَّ عَلَيۡكَ لَعۡنَتِىۡۤ اِلٰى يَوۡمِ الدِّيۡنِ ﴿٧٨﴾

मरदूद है। और तुझ पर हिसाब के दिन तक मेरी लानत है।

قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾ قَالَ فَاِنَّكَ

इबलीस ने कहा मेरे रब! फिर तू मुझे मुहलत दे उस दिन तक जिस दिन क़ब्रों से मुर्दे ज़िन्दा किए जाएंगे। अल्लाह ने

مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨١﴾ قَالَ

फरमाया के यक़ीनन तू उन में से है जिन्हें मुहलत दी गई। मुक़र्ररा वक़्त के दिन तक। इबलीस ने कहा

فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ

के फिर तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं ज़रूर उन तमाम को गुमराह करूंगा। मगर तेरे बन्दे उन में से जो खालिस

الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَالْحَقُّ ۙ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿٨٤﴾ لَاَمْلَـَٔنَّ

किए हुए हैं। अल्लाह ने फरमाया के ये हक़ है। और हक़ ही मैं केहता हूँ। के मैं जहन्नम

جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ

ज़रूर भरूंगा तुझ से और उन तमाम से जो उन में से तेरे पीछे चलेंगे। आप फरमा दीजिए

مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿٨٦﴾

मैं तुम से इस पर कोई उजरत नहीं मांगता और मैं तकल्लुफ करने वालों में से नहीं हूँ।

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿٨٨﴾ ع ٥

ये तो सिर्फ तमाम जहानों के लिए नसीहत है। और एक वक्त के बाद तुम्हें उस की खबर ज़रूर मालूम होगी।

سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ (٥٩) (٣٩)

اٰيَاتُهَا ٧٥ رُكُوْعَاتُهَا ٨

उस में ७५ आयतें हैं सूरह जुमर मक्का में नाज़िल हुई और ८ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ

इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ से है। यक़ीनन हम ने आप की तरफ

اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿٢﴾

ये किताब हक़ के साथ उतारी है, पस आप अल्लाह की इबादत कीजिए उसी के लिए इबादत को खालिस करते हुए।

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ؕ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

सुनो! अल्लाह के लिए खालिस इबादत है। और वो जिन्हों ने अल्लाह के सिवा हिमायती

مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ؕ وقف لازم

बना लिए हैं, (केहते हैं) हम उन की इबादत नहीं करते मगर इस लिए ताके वो हमें अल्लाह के कुछ क़रीब कर दें।

اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝

यक़ीनन अल्लाह उन के दरमियान फैसला करेगा जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ۝٣ لَوْ اَرَادَ

यक़ीनन अल्लाह उस को हिदायत नहीं देता जो झूठा है, बहोत ज़्यादा नाशुकरी करने वाला है। अगर अल्लाह

اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ

औलाद बनाना चाहता तो ज़रूर अपनी मखलूक़ में से मुन्तखब करता जिसे चाहता।

سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٤ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

अल्लाह औलाद से पाक है। यक़ीनन वो यकता है, ग़ालिब है। उस ने आसमान और ज़मीन

وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ

हिक्मत से पैदा किए। वो रात को दिन पर लपेटता है और दिन

النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ

को रात पर लपेटता है और उस ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है। सब के सब

يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝٥ خَلَقَكُمْ

वक़्ते मुक़र्ररा तक के लिए चलते रहेंगे। सुनो! वो ज़बर्दस्त है, बहोत ज़्यादा बख्शने वाला है। उस ने

مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ

तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर उसी जान से उस की बीवी को बनाया, और उस ने

لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ

तुम्हारे लिए चौपाओं में से आठ जोड़े बनाए। वो तुम्हें पैदा करता है तुम्हारी माओं के

اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ

पेट में एक शक्ल के बाद दूसरी शक्ल में, तीन तारीकियों में।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

यही अल्लाह तुम्हारा रब है, उसी के लिए सल्तनत है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं।

فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٦ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۚ

फिर तुम कहाँ फेरे जा रहे हो? अगर तुम कुफ्र करोगे तो यक़ीनन अल्लाह तुम से बेनियाज़ है। और अल्लाह अपने

وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ

बन्दों के लिए कुफ्र पसन्द नहीं करता। और अगर तुम शुक्र अदा करो तो उस को तुम्हारे लिए वो पसन्द करता है।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ

और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर अपने रब की तरफ

مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ

तुम्हें लौटना है, फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की जो तुम करते थे। बेशक वो

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ

दिलों का हाल खूब जानने वाला है। और जब इन्सान को ज़रर पहोंचता है

دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ

तो वो अपने रब को पुकारता है उसी की तरफ तौबा करते हुए, फिर जब अल्लाह उसे अपनी नेअमत अता करता है

نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْٓا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ

तो जिस काम के लिए पेहले उस को पुकारता था उसे भूल जाता है, और अल्लाह के लिए शरीक ठेहराने

اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ

लगता है ताके वो अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे। आप फरमा दीजिए के तू मज़ा उड़ा ले अपने कुफ्र के साथ

قَلِيْلًا ۖ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝٨ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ

थोड़ा सा। यक़ीनन तू दोज़खियों में से है। भला वो शख्स जो इबादत करने वाला है

اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا

रात के औक़ात में सज्दे में और क़याम में, आखिरत से डरता है और अपने रब की रहमत का

رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ

उम्मीदवार है? (ये शुक्रगुज़ार अच्छा या नाशुकरा?) आप फरमा दीजिए क्या वो लोग जो इल्म रखते हैं और जो इल्म

وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٩ ع ١٥

नहीं रखते दोनों बराबर हो सकते हैं? सिर्फ अक़्ल वाले ही नसीहत हासिल करते हैं।

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ

आप फरमा दीजिए ऐ मेरे वो बन्दो जो ईमान लाए हो! तुम अपने रब से डरो। इस दुन्या

اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرْضُ اللّٰهِ

में जिन्हों ने नेकी की उन के लिए अच्छा बदला है। और अल्लाह की ज़मीन

وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝١٠

वसीअ है। सब्र करने वालों को उन का सवाब गिने बग़ैर पूरा पूरा (अस्ल और कई गुना ज़ाइद) दिया जाएगा।

قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ

आप फरमा दीजिए के मुझे हुक्म है के मैं अल्लाह की इबादत करूँ उसी के लिए इबादत को खालिस

الدِّيْنَ ۝١١ وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝١٢

करते हुए। और मुझे हुक्म है के मानने वालों में से सब से पेहला मानने वाला बनूँ।

قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ

आप फरमा दीजिए अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूँ, तो मैं डरता हूँ भारी दिन के

عَظِيْمٍ ۝١٣ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِيْ ۝١٤

अज़ाब से। आप फरमा दीजिए के मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ उसी के लिए इबादत को खालिस रखते हुए।

فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ

अब तुम अल्लाह को छोड़ कर जिस की चाहो इबादत करो। आप फरमा दीजिए यक़ीनन खसारा उठाने वाले वो हैं

الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

जिन्हों ने अपनी जानों और अपने घर वालों को खसारे में डाला क़यामत के दिन।

اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝١٥ لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ

सुनो! यही खुला खसारा है। उन के लिए उन के ऊपर से

ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ

आग के सायबान होंगे, और उन के नीचे से भी आग के सायबान होंगे। इस से अल्लाह

اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ۝١٦ وَالَّذِيْنَ

अपने बन्दों को डराते हैं। ऐ मेरे बन्दो! तुम मुझ से डरो। और वो लोग जो

اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا

शैतान से (यानी) उस की परसतिश से दूर रेहते हैं और अल्लाह की तरफ मुतवज्जेह

اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝١٧ الَّذِيْنَ

रेहते हैं उन के लिए बशारत है। तो आप बशारत सुना दीजिए, मेरे उन बन्दों को

يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ

जो इस कलाम को सुनते हैं, फिर सब से अच्छे कलाम की पैरवी करते हैं। उन को

الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝١٨

अल्लाह ने हिदायत दी है और यही अक़्ल वाले हैं।

اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ
क्या फिर वो शख़्स जिस पर अज़ाब का कलिमा साबित हो गया, क्या फिर आप बचा सकते हैं
مَنْ فِى النَّارِ ۝١٩ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ
उसे जो आग में है? लेकिन वो जो अपने रब से डरते हैं, उन के लिए ऊपर वाली मन्ज़िलें होंगी
مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ
जिन के ऊपर भी मन्ज़िलें बनी हुई हैं। उन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी।
وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ۝٢٠ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ
अल्लाह का वादा है। अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करेंगे। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने
اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِى الْاَرْضِ
आसमान से पानी उतारा, फिर उसे ज़मीन में चशमों में चलाया,
ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ
फिर वो उस के ज़रिए खेती निकालता है जिस के रंग मुखतलिफ होते हैं, फिर वो बिल्कुल खुश्क हो जाती है, फिर तुम उसे
مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى
पीला देखते हो, फिर अल्लाह उसे कूड़ा करकट बना देते हैं। यक़ीनन उस में नसीहत है
لِاُولِى الْاَلْبَابِ ۝٢١ اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ
अक़्ल वालों के लिए। क्या फिर जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया,
فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ
फिर वो अपने रब की तरफ से नूर पर है। फिर हलाकत है उन के लिए जिन के
مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٢٢ اَللّٰهُ نَزَّلَ
दिल अल्लाह की याद से सख्त हैं। ये लोग खुली गुमराही में हैं। अल्लाह ने बातों में से सब से अच्छी बात
اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِىَ ۖۗ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ
(यानी) किताब को उतारा है, जिस के मज़ामीन एक दूसरे के मुशाबेह हैं जो बार बार दोहराए गए हैं। जिस से अपने
جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ
रब से डरने वालों के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। फिर उन की खालें और उन
وَ قُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ
के दिल अल्लाह की याद के लिए नर्म हो जाते हैं। ये अल्लाह की हिदायत है, उस से अल्लाह हिदायत देता है

ع ۲ / ۱۲

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

जिसे चाहता है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

क्या फिर वो शख्स जो क़यामत के दिन अपने चेहरे के ज़रिए बदतरीन अज़ाब से बचेगा। (क्या गुमराह व मुत्तक़ी बराबर?)

وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٣٤﴾ كَذَّبَ

और ज़ालिमों से कहा जाएगा के तुम चखो उन आमाल को जो तुम करते थे। उन लोगों

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ

ने झुठलाया जो उन से पेहले थे, फिर उन के पास अज़ाब आया जहाँ से

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

उन को गुमान भी नहीं था। फिर अल्लाह ने उन्हें रुस्वाई का अज़ाब दुन्यवी ज़िन्दगी में चखा दिया।

وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ وقف لازم

और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब तो सब से बड़ा है। काश के उन्हें इल्म होता। यक़ीनन

ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ

हम ने इन्सानों के लिए इस कुरआन में हर मिसाल बयान की,

لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ

शायद वो नसीहत हासिल करें। उस को अरबी वाला कुरआन (बना कर उतारा), जो

ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا

कजी वाला नहीं है ताके वो डरें। अल्लाह ने मिसाल बयान की के एक आदमी है

فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ

जिस में कई आपस में झगड़ने वाले शरीक हैं और एक शख्स है जो सालिम एक ही शख्स का है।

هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ

क्या दोनों मिसाल के ऐतेबार से बराबर हो सकते हैं? तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं। बल्के उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾

जानते नहीं। यक़ीनन आप को भी मरना है और उन्हें भी मरना है।

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾ ع ١٧

फिर क़यामत के दिन अपने रब के सामने तुम झगड़ोगे।